प्रथम समसत्र

हिंदी साहित्य के इतिहास में प्रथम समसत्र में दो कोर पेपर है, जिसमें से प्रथम पेपर आदिकाल के इतिहास और साहित्य से संबंधित है और दूसरा पेपर भक्तिकाल के इतिहास और साहित्य से संबंधित है ।

Core-1

हिंदी साहित्य के इतिहास के प्रथम सत्र के अध्ययन से विद्यार्थियों को हिंदी साहित्य के इतिहास से संबंधित विस्तृत जानकारी मिलती है। हिंदी भाषा का उद्भव कब से हुआ। हिंदी साहित्य को लेकर साहित्य के इतिहास ग्रंथ का लेखन कब से प्रारंभ हुआ । इसमें कौन-कौन से प्रमुख लेखक है। कौन-कौन सी पद्धति को अपनाकर लेखन कार्य किया गया है ।और किस प्रकार काल विभाजन का आरंभिक प्रयास करते हुए वैज्ञानिक रूप से हिंदी साहित्य के संपूर्ण इतिहास को विविध कालों में विभाजित किया गया है। इसकी जानकारी विद्यार्थियों को प्राप्त होती है। हिंदी साहित्य के आदिकाल को आदिकाल का नामकरण क्यों दिया गया । इसकी समय सीमा कब तक निर्धारित की गई। इस काल में किस प्रकार की रचनाएं लिखी गई आदि से जुड़ी जानकारी भी विद्यार्थियों को प्राप्त होती है । आदिकालीन काव्य में भाषा का स्वरूप क्या था। कौन-कौन से कवि इस समय काव्य रचना कर रहे थे। इससे जुड़ी जानकारी भी विद्यार्थियों को प्राप्त होती है।

Core -2

दूसरे कोर पत्र में भक्ति काल के साहित्य और इतिहास का परिचय मिलता है। इसमें विद्यार्थियों को यह बताया जाता है कि भक्तिकाल को क्यों यह नाम दिया गया। उस समय की क्या परिस्थितियां थी कि भक्ति साहित्य की रचना विशेष रूप से की गई । भक्ति काल में भक्ति आंदोलन के होने का क्या कारण था। विद्यार्थियों को इसकी भी जानकारी प्राप्त होती है। भक्ति काल में राम और कृष्ण जैसे सगुण ईश्वर की उपासना क्यों की गई । संतो और सूफियों ने क्यों मानव समुदाय में प्रेम और ज्ञान के माध्यम से एकता लाने का प्रयास किया । इसकी जानकारी विद्यार्थियों को मिलती है । इसके साथ साथ उनके चरित्र का भी परिष्कार होता है उनके मन में धार्मिक संकीर्णता के विचार दूर होते हैं।